

६३ नमः यनदवताये ॥ महाकाश उवाच ॥ अस्याहिवशुमानायसीहितायासूत्रश्वविगता निशीथिनिवीजानासन्निवशुधिकानिव ॥ अशीति
 १०० १० ३१०
 धनार्त्तकूटाडयकूटाश्चसकनिः ॥ स्वस्वनाम्नेवविस्थाताषट्गतीवदशधिका ॥ तान्यद्वनामियूनतायथायसूगर्मरुवतावीजस्यैकस्यनाः
 मानिसीतिरूयासियावृति ॥ एकेकैकस्यचिन्नामतत्त्वाज्ञानेनसम्भवत् ॥ तद्वद्वान्यनिह्नायमनुद्वानसमावनत् ॥ वीजाद्वानास्थय^६ल्लहः
 तीर्थयनमथाद्यते ॥ यस्यकस्यापिनास्थयमीस्थानेवद्वहारुवत् ॥ दवीकुद्वान्गयायसान्वययातयस्यधशानगामुमालाकवदन्नावनन्नज

यदयिनयश्च नयदिश्वन कश्चा नैव साधयत् ॥ गुर्वयदगता लब्धयन्या सौर्वनोदिका यश्च रुसाधयत् सर्व सदा तद्वावरावित ॥ ७ ॥
नाधनो विन्दयुनो यववाग्धुवो ॥ तात्रवदादिगयती मखागमनि तारिधशतगीथी न्यमुवेत न्यमेधसात्रखगौकयशात्रनानायायिकूटाः ॥
स्यस्रकवलनामनशवीजं कूटाययदतः कूटं ह्ययं सुसाधकः ॥ सदीर्घकात्रसयत्रः सानलाऽधयविन्दयका माया लजा शोवनगी ययावीः ॥
ताकूलाङ्गना लक्ष्मीवामादिविन्दयार्धका ॥ सानलावित ॥ कामोवामादिविन्दयार्धका विधिना ॥ सविन्दवदनयाऽऽसविन्दवाम

दन्त २५०
दकूलो ॥ अथात्र नन्दे नृद्वन्दे वामाद्वावसमन्वितः ॥ सविन्दः ॥ कोऽनला नृटांग नृण कृण कालिका ॥ सास्यः ॥ सिद्धाऽधनेधमजियामृध्रिधीयता ॥
वामग्रह्या हयगीया गोत्री च सविसर्गकः ॥ सोष्ठः ॥ साध्यावधूर्वामद्विन्दसतत्राऽकमात्वा मक धुः ॥ अध्यावदास्या सविन्द्या कवधुक् ॥ मः
हाकाधक जया लोद्वीजरुवतः ॥ कमात् ॥ सर्वतादृगस्वनीयम कूर्चया सादः ॥ ययि विन्दाष्टयम्बामयाध्वम ॥ अध्यावऽकिनी रुवत् ॥ ७ ॥ दन्त
ध्यादनेधधुविश्वऽसववहि तच्चदा नृटवान्हादिरुतः ॥ किंयनृषऽकमात् ॥ विन्दुः ॥ नन्दमो नृटऽसव रुमिकमायुतः ॥ मुखेवामादिकधुः ॥

कवर्गितस्य हृतीययश्चमाकृत्तु हृतीयययश्चमकृत्तु

समर्पणं कर्मसुतं॥ सविन्दु नमः ४ धाकाधनाय निला १४ ३४ वामधन्यनिता कलुषवर्गनाली ययश्चभो॥ स्यातां सविन्दु कर्मता वेधदवस्थ
धाकाकी॥ मूर्धन्यस्य वतश्च वमहादाकिनी सिंहको॥ तथा सार्हीयको वधुर्गि नावदनसंयुतो॥ गदाभयप्रभो भद्रसागत्रो रुवतः ४ कमाता कस्वामु
यः स्वनाश्या ४ सानस्त्रा नावनानन॥ स्फुटं कुरु नादां स्वावियनी तकमहाहिा वधुः ४ कवठता ४ यश्च विन्दु दीर्घस्वनाचिता ४ छुडायवर्गश्चत
आहका नायिवतादृगः ४ नूर्यनसक्त आगन्धस्यर्ग ४ गदश्च लावनी॥ जिह्वाद्यार्ग तथा लक्ष्मि अर्चनामा न्यूनकमाता महायादसमाना दानशानीया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

एकाग्रडाकानसहिते।

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय ।

[illegible]

ना॥ जकल कस नाथना विन्दूना सर्वदा नित १ न कदापि विमर्ग दयवीजं तदयन ॥ स्वने कसे सुख दीर्घने वं ८ गिनमा नित १ न ना ॥ श्वे वस्व
नादीनि नामानि स्युः १ सूत्रं नित ॥ याग कुरु कला सुगुण वर्द्धि वाग्गुवा १ यग वाग्गुना दाखा स्वना १ मरि १ धृष्टी ॥ नृप नाथ न स द्रव नो ल्यः
वक्त्र १ न १ न ॥ सूखद १ स्व महा पा १ य १ सांग न लया कया १ नाग ल ग १ मा सा स्त्रिय नृप १ वृद्धि या र्क नृक ॥ जीवता न क स ली १ धन ग १ नी र्था १ प्र मा
इध का १ य नृक १ धनि स र्हा स्या द्द क १ ना १ ह ला १ थिथ ॥ न ना १ भ द १ म १ न मा १ ध म १ द र्ग १ न रा १ व ना १ न व ना १ द न १ ग म १ न वि स र्ग १ दानि स्यु य १ वि ना वि

^{वं लं वं सं हं कं खं लं यं ङं वं वूं जं जं}
 हियमरदिष्टीष्टायवाग्नाकनिरुयाशास्त्राष्टयनिनिष्ठानामरिधनंरुलायियास्यर्गः वज्रुर्वरौरुत्रीगन्धान्तनिवादकाः॥ मध्यमः यश्च मध्य
^{लं टं लं उं हं लं नं लं दं लं नं यं हं वं हं मं यं नं}
 विधेवर्गाननववाडहीथहायिकुवायिहं कात्रादवदहकः॥ स्मरुद्रुकात्रहीरारुनानामस्यैष्टदकृतिः॥ मध्यः॥ सामीथष्टाष्टाष्टः॥ मन्त्रनकाः॥
^{लं वं लं वं सं हं कं न कं खं लं जं द्यं ङं}
 शयः॥ विकाननिककल्याः॥ समाधीनवकस्तथाः॥ अधनययवाः॥ सीहलदविमयनिताः॥ हानावमेगावन्नगस्तथाः॥ द्वावाकनववाः॥ यवस्तदधश्चत्रयि
^{वां कूं आं आं लं टं लं जं टं लं नं लं द्यं कूं लं नं लं द्यं कूं}
 यनियशरुकस्तथाः॥ नष्टान्वतागर्थाः॥ ज्ञातायुक्तायतिरुहकः॥ सुवक्तृस्तथाः॥ वक्तावाक्काः॥ द्वसिकस्तथाः॥ आग्नीध्रध्यायिघाताः॥ संवदिकः॥ सुमखावृ

^{नां यं हं वां हं मां यं नं लं वां लं वां मां हं कूं}
 निशगर्हयथादक्षिणाग्निस्तथाः॥ वनीयकः॥ वतागर्माः॥ इतिः॥ सामिधेनीचनूदूखनीः॥ इदूधवाः॥ गवाः॥ इक्षुः॥ गथाः॥ इवरुतस्तथाः॥ दुर्द्धदना
^{कूं खं लं यं हं वां कूं जं जं लं टं लं जं लं}
 चिताः॥ सीहलकमदायनिकीर्हिताः॥ गदायाजः॥ ययाजः॥ इत्याजः॥ यवियाजः॥ कः॥ योः॥ ययाजनीवाकः॥ युक्तमन्दिननववाः॥ अयानवक्तृयाकाः॥ अयाम
^{नं लं द्यं लं नं जं हं वां हं मां यं नं लं वां लं}
 सीहलयाकमीः॥ धनः॥ यः॥ स्तानिः॥ स्तानिः॥ दान्याः॥ निनाकमाताः॥ गन्धवमस्तथाः॥ इनाथः॥ समूहः॥ कोः॥ कवः॥ निवाः॥ नजः॥ यैवयभादाः॥ वाः
^{वां मां हं कूं कं खं लं यं ङं वं वूं जं जं जं टं}
 धववटः॥ आसादकः॥ यालोचयः॥ धादनाद्विताहलः॥ कगायः॥ कोः॥ नजः॥ यैवगः॥ गः॥ कः॥ रूनीः॥ गथाः॥ गन्धनीः॥ वकः॥ गन्धनीः॥ इतिः॥ निगः॥ नववाः॥ इतिः॥ की

^ॐ
 लाइस्त्रिहदीववेतस्त्रिककटकुटी॥ नकुनमाथसमाथो कयणीमृष्टिका नली॥ कुनिकादिग्धसंवर्गलीयालीकलीहली॥ नकुनीधूमलावधीदनी
^ॐ ^ॐ ^ॐ
 दवीगुठकुमाशसमवित्तानागिनसासह्याकाहलीहली॥ नुतिवीजायवीजानानामानिकथितानित॥ ॥ अथावदामिदवगिकूटानामृष्टि
 यत्रीथसासमवतमागुवाजिमधहलीरुवत्॥ यियनघमुयांसह्यावकसोगम्यहत्तवाववीमितामवीदोनवत्स्यसिल्वगतोश्विली॥ नरुचुदेरु
 वरुहदीदिवर्गुस्यसंगहशद्यामुयाधवधुनीरिनारिनारिधिरुवत्॥ नरुनामातद्वानकह्यसंहिताविदा॥ स्वनविन्दविसर्गधन

^{का} ^{का} ^{रव} ^{रव} ^ग ^ग
 गुरुवकीरुनीकनकायस्वनस्वर्वागजागवोद्यटाश्चनशाचनश्चान्धुल्लङ्घजलजातीमत्रामत्रशठक्षत्रीका० लक्ष्मीलातिभातिभारकार
 की॥ नरुस्रमथलथलीदलदानधवाधनशाननानावीयदयवहलीहलीववोवली॥ रुवाहलीमनामायायनिर्याग्ननवात्रशालयालीलाग
 ०१गमव०१य०१सम०१सद०१हनाहान०१कमादीनरिगदना०१यकीरिताशयप्रशनामयिवर्गधमायावधुमुय०१कमात्॥ य०१म०१य०१म
^{कु} ^{सु} ^{सु} ^न ^{कु} ^{कु} ^ह ^ह ^ह ^ह ^ह ^ह ^ह ^ह ^ह ^ह ^ह ^ह ^ह ^ह ^ह
 स्यादयिनसहकायहयनिनमरावावृषादृगीसुधासाखायमानय॥ हयजनाजनावार०१ममुमुकुद०१स्वन०१धव०१ग्राहनिवीधनर्ध

^{कू लू मू वू कू कू दू कू कू थू दू कू कू वू मू कू मू कू कू}
 नामान्यं नूकमान् ॥ ननवांशुः ॥ गववः ॥ विश्वगर्हयदवाः ॥ सिन्धुवर्णीकृटीजायाश्च नवीवीह ० ॥ अमा ॥ जालगलार्हयमम ० ॥ पा ० ॥ ग ० ॥ उमा ॥
^{कू लू मू वू कू कू दू कू कू थू दू कू कू वू मू कू मू कू कू}
 मज्ञानरुमथार्मश्च नरुस्यवयवनिग ॥ मलकानरुवयस्यथूनविगतिमस्यका ॥ सोधूरुदगिनि ॥ अदीगुरुययविषददा ॥ दवदा लारुदीः
^{यू कू कू वू मू कू लू मू}
 निविगुणखगत्रयया ॥ ह मत्रत्तम दीनानां नामास्य ॥ यत्रमध्वनि ॥ जलानलानिलागूत्राविद्यनिता रुठरुथा ॥ धनाभायीनलामूर्ध्वविद्यनीत ॥ सहि
^{वू ह म ल व म का द न य न कू म क व उ म क उ न य सक क रु क य व क क न व म क}
 वरं ॥ ह म हा व म का द न्या नहा नूहा हि मयय ॥ गुरुनन्दाय ॥ नाग ॥ कान्ति ॥ भनासुखं कमान् ॥ सकृद्वाह दयी धसाद्वकदीनवमीयनि ॥ दूर्युः

११

^{कू लू वू कू कू}
 नंगरुहू नू लवाजातिविनिधिया दूरु ॥ यूरुस्वनावर्था नवावामधुतिश्चकी ॥ गम्वसमवृथो वरुमामायाहवा ॥ इक ॥ उत्त्यागुयनकूटः
^{का ल का म का का न स का ली}
 लवालीलागुरुमत्रशकाय ॥ गुरुनन ॥ साम्यनकावामकृदीनित्र ॥ मारुध्वनदीनमनाददाहान ॥ कनायति ॥ यया नूरुस्यनूषाववा
^{ज ल ल क म उ}
 जागीरुनालयशकमानावा मकलुवमिदव ॥ निनाचिग ॥ हानानकागुरुवयथिम ॥ काय ॥ खवा ॥ भन ॥ सधाजात ॥ सविन्द ॥ स्यातूक
^{स व ल का म डी}
 नसाम्यवनाहनिशकीनमाया ॥ धनदनेनघान ॥ निनसाचिग ॥ नन्दाकनस्वनकादनकावामधुतीन्दरि ॥ लमाना ॥ शामकूट ॥ दुवीः

नसुनूव
 कू
 कू
 कू

[illegible][illegible]

^{स क ७ उ} सदाशुली गूना वामक ^ॐ कौ ^ॐ गय ^ॐ क ^ॐ द ^ॐ काम ^ॐ स ^ॐ दाम ^ॐ न ^ॐ श ^ॐ क ^ॐ न ^ॐ ८ ^ॐ गुरु ^ॐ य ^ॐ ग ^ॐ ८ ^ॐ गूना ^ॐ वा ^ॐ न ^ॐ वा ^ॐ म ^ॐ क ^ॐ दु ^ॐ के ^ॐ ८ ^ॐ क ^ॐ र ^ॐ वि ^ॐ ण ^ॐ मा ^ॐ य ^ॐ गुरु ^ॐ क ^ॐ मा ^ॐ वी ^ॐ ऊ ^ॐ रु ^ॐ ह ^ॐ स ^ॐ क ^ॐ ८ ^ॐ म ^ॐ
^ॐ या ^ॐ गुरु ^ॐ क ^ॐ था ^ॐ वी ^ॐ ण ^ॐ गूना ^ॐ वा ^ॐ म ^ॐ क ^ॐ गी ^ॐ न ^ॐ द ^ॐ यू ^ॐ क ^ॐ ८ ^ॐ ग ^ॐ कि ^ॐ नी ^ॐ न ^ॐ व ^ॐ जा ^ॐ नी ^ॐ व ^ॐ क ^ॐ मा ^ॐ मा ^ॐ या ^ॐ क ^ॐ दा ^ॐ ग ^ॐ वि ^ॐ ता ^ॐ र ^ॐ ही ^ॐ य ^ॐ क ^ॐ व ^ॐ न ^ॐ द ^ॐ क ^ॐ र ^ॐ स ^ॐ द ^ॐ ८ ^ॐ क ^ॐ न ^ॐ गुरु ^ॐ ल ^ॐ य ^ॐ ८ ^ॐ ग ^ॐ म ^ॐ ह ^ॐ ८ ^ॐ स्व ^ॐ वा ^ॐ वि ^ॐ : १३
^ॐ नि ^ॐ शि ^ॐ ८ ^ॐ स्या ^ॐ हा ^ॐ व ^ॐ ता ^ॐ न ^ॐ गुरु ^ॐ क ^ॐ मा ^ॐ ८ ^ॐ स ^ॐ व ^ॐ न ^ॐ द ^ॐ क ^ॐ र ^ॐ था ^ॐ गू ^ॐ न ^ॐ ८ ^ॐ स ^ॐ वा ^ॐ म ^ॐ क ^ॐ ति ^ॐ गी ^ॐ र्घ ^ॐ की ^ॐ वृ ^ॐ ष ^ॐ ८ ^ॐ ला ^ॐ हि ^ॐ म ^ॐ म ^ॐ का ^ॐ वे ^ॐ क ^ॐ व ^ॐ क ^ॐ र ^ॐ म ^ॐ श ^ॐ र ^ॐ ८ ^ॐ वि ^ॐ क ^ॐ म ^ॐ सो ^ॐ ध ^ॐ स ^ॐ ध ^ॐ ना ^ॐ ग ^ॐ :
^ॐ जा ^ॐ य ^ॐ ध ^ॐ न ^ॐ ८ ^ॐ स ^ॐ के ^ॐ ८ ^ॐ य ^ॐ न ^ॐ क ^ॐ र ^ॐ उ ^ॐ वि ^ॐ रु ^ॐ य ^ॐ द ^ॐ र ^ॐ न ^ॐ म ^ॐ य ^ॐ य ^ॐ वि ^ॐ रा ^ॐ गा ^ॐ व ^ॐ ल ^ॐ वा ^ॐ ण ^ॐ वी ^ॐ ण ^ॐ हा ^ॐ न ^ॐ मा ^ॐ या ^ॐ ग ^ॐ वि ^ॐ हि ^ॐ ता ^ॐ स ^ॐ दा ^ॐ वी ^ॐ ण ^ॐ ह ^ॐ न ^ॐ म ^ॐ ना ^ॐ वि ^ॐ नि ^ॐ शि ^ॐ ८ ^ॐ सा ^ॐ नि ^ॐ ल ^ॐ ८ ^ॐ क ^ॐ

^ॐ ला ^ॐ वी ^ॐ ण ^ॐ गुरु ^ॐ स ^ॐ दा ^ॐ हा ^ॐ न ^ॐ रा ^ॐ ह ^ॐ य ^ॐ गी ^ॐ व ^ॐ स ^ॐ वा ^ॐ म ^ॐ क ^ॐ ८ ^ॐ स्या ^ॐ य ^ॐ मु ^ॐ व ^ॐ म ^ॐ हा ^ॐ क ^ॐ र ^ॐ गुरु ^ॐ ली ^ॐ ला ^ॐ क ^ॐ मा ^ॐ क ^ॐ ना ^ॐ ८ ^ॐ म ^ॐ ना ^ॐ वि ^ॐ नि ^ॐ शि ^ॐ ८ ^ॐ न ^ॐ य ^ॐ नि ^ॐ या ^ॐ म ^ॐ हि ^ॐ य ^ॐ नि ^ॐ व ^ॐ क ^ॐ ता ^ॐ न ^ॐ हा ^ॐ की ^ॐ न ^ॐ गुरु
^ॐ र ^ॐ न ^ॐ द ^ॐ म ^ॐ ना ^ॐ य ^ॐ ति ^ॐ नि ^ॐ वा ^ॐ नि ^ॐ री ^ॐ स ^ॐ वा ^ॐ म ^ॐ क ^ॐ दु ^ॐ वा ^ॐ क ^ॐ स्या ^ॐ त्वा ^ॐ वा ^ॐ रा ^ॐ ग ^ॐ वा ^ॐ य ^ॐ ग ^ॐ ८ ^ॐ वी ^ॐ ण ^ॐ वि ^ॐ नि ^ॐ शि ^ॐ सो ^ॐ य ^ॐ दु ^ॐ स ^ॐ दा ^ॐ ह ^ॐ न ^ॐ क ^ॐ न ^ॐ ज ^ॐ मा ^ॐ ८ ^ॐ गुरु ^ॐ मा ^ॐ या ^ॐ गू ^ॐ न ^ॐ वा ^ॐ म ^ॐ क ^ॐ ८ ^ॐ न ^ॐ द ^ॐ गुरु
^ॐ क ^ॐ का ^ॐ रु ^ॐ व ^ॐ ता ^ॐ गुरु ^ॐ या ^ॐ हा ^ॐ न ^ॐ था ^ॐ न ^ॐ द ^ॐ ल ^ॐ य ^ॐ ८ ^ॐ स्व ^ॐ वा ^ॐ हि ^ॐ म ^ॐ नि ^ॐ न ^ॐ श ^ॐ वा ^ॐ म ^ॐ क ^ॐ स्या ^ॐ ने ^ॐ म ^ॐ र ^ॐ स्या ^ॐ ल ^ॐ य ^ॐ ८ ^ॐ जा ^ॐ य ^ॐ न ^ॐ त ^ॐ दा ^ॐ स्व ^ॐ र्वा ^ॐ गुरु ^ॐ की ^ॐ न ^ॐ गुरु ^ॐ मा ^ॐ या ^ॐ हा ^ॐ न ^ॐ क ^ॐ ना ^ॐ रु ^ॐ था ^ॐ ८
^ॐ स ^ॐ वा ^ॐ वि ^ॐ नि ^ॐ शि ^ॐ मी ^ॐ नू ^ॐ रा ^ॐ या ^ॐ ग ^ॐ म ^ॐ रु ^ॐ द ^ॐ ह ^ॐ व ^ॐ म ^ॐ ८ ^ॐ म ^ॐ र ^ॐ ली ^ॐ ला ^ॐ गुरु ^ॐ मा ^ॐ या ^ॐ स ^ॐ दा ^ॐ ह ^ॐ न ^ॐ क ^ॐ ना ^ॐ रु ^ॐ था ^ॐ वि ^ॐ नि ^ॐ शि ^ॐ वि ^ॐ हि ^ॐ ता ^ॐ वा ^ॐ सा ^ॐ रु ^ॐ व ^ॐ द ^ॐ न ^ॐ द ^ॐ म ^ॐ हा ^ॐ रु ^ॐ ली ^ॐ गि ^ॐ नि ^ॐ य ^ॐ न ^ॐ य ^ॐ म ^ॐ की ^ॐ न ^ॐ

नादविमर्शनादिकर्माणि। ज्ञानमाययाऽयुनालया। एकीकृत्यमहेश्वरीमय्यावाचनान् सर्वानरुमयवगयी। दयामुयाध्वीजीजानाययैकेवाश्रितारुवगाद्विनी।
याद्यन्त्रऽकार्यहृतीयसमातथा। नामद्वयंनथेकस्यहृयवीजस्यार्चिता। भक्तिनीनावयाऽसन्निदध्र। एतन्मृतामयाऽ। दानवाचलयाऽ। मकथान्विविद्युतऽ।
कायालखलयाऽनिष्ठमहताऽ। गयजमयाऽ। हनुकानीहनिता। कायकृच्चयानेकभवहि। वीजानांवायिकूठानांनान्यकानिकानिचिता। गयकूठस्ययाकूठग्रार्थवीजनु
कवली। रुद्रयानन्दप्रोदायनादहगकलागुणऽ। भक्तिनीवदसिद्धाग्रयाध्वानांनगकयऽ। गथागावुवनिर्वा। एतन्मृतामयाऽ। दानवाचलयाऽ। मकथान्विविद्युतऽ।

[illegible]

गभूतं वक्रवीजकूटाय कूटकी यरे कभवहिरुवनाम कूटाय कूटमा ॥ ततः कूटामुरुद ननि ॥ यसाधका रुमे ॥ याजायत्यं तथा वाक् वेक्क वीधि ॥ गभूतनी ॥ गभूतनी ॥ गभूतनी ॥
 यं वा ॥
 दं वा यथं या न्ये गभूतनी ॥ यानि या न्ये कूटानि तल्लं दं सुदयारुवत् ॥ तल्लं दं सुदय मनु ॥ सजवमी हय न द्विष ॥ सं सिद्धं तल्लं दं य कूट ॥ ययै आल्लं दं मुकी य न द्विष ॥
 तसं त्या कानि ॥ सनक्ति तल्लं दं ॥ तल्लं दं तल्लं दं वि तल्लं दं सर्वमं ॥ तल्लं दं तल्लं दं सदा तल्लं दं ॥ अत्र गीय मं य मल्लं दं न वत सा ॥ तल्लं दं तल्लं दं नीयं य तल्लं दं मं य सन सा वधान तल्लं दं ॥ सदा ॥ सि
 द्धी न वा प्राप्ति या या न्ये यि नि कूट नि ॥ दी र्घा यूर्ध्व न वा नृणां गी द हानं मा कू मी य या नृ ॥ अदा अयं गभय तल्लं दं वग ॥ य सिद्धि ति ॥ य का गय तल्लं दं ॥ अथ वनि धनं नि न य ॥ इति च

यधनग

॥ अथ तल्लं दं नृणां कानि वीजानि कथयामि ॥ तथा कूटाय कूटानि वीजानां मयि मूरुत ॥ मयि कूटानि देव तं वयं यथैव यवयामि ॥ तं तल्लं दं महा कालं सीहि नाया वीजा य
 वीज कूटाय कूटानि तल्लं दं नीयं य तल्लं दं ॥ श्री महा कालं डवा च ॥ अथ कल य कल्याणि वीजा न्ये न्यानि कानि वि तल्लं दं ॥ या न्ये कूटानि तल्लं दं गवान् रूमा तल्लं दं मल्लं दं ॥
 तल्लं दं नाना नदी नाना यूर्ध्व न वा नृणां गी द हानं मा कू मी य या नृ ॥ अदा अयं गभय तल्लं दं वग ॥ य सिद्धि ति ॥ य का गय तल्लं दं ॥ अथ वनि धनं नि न य ॥ इति च
 या वीज कूटाय ॥ अत्र को विन्दु सगर्भं य न्ये न्यानि यजय तल्लं दं ॥ नदी नो विन्दु सगर्भं या वीज कूटानि तल्लं दं ॥ तल्लं दं तल्लं दं नीयं य तल्लं दं ॥ य न्ये कूटानि तल्लं दं ॥ य न्ये कूटानि तल्लं दं ॥

एकत्रादि।

कथन

वैद्यनयाः संयादिप्रियावर्तिनादसर्गस्तिरोयावामागन्तुः पूर्ववाधकृत् यत्मा स्वयं वा अमरावकवलीहिरत्। स्वनाममयिविहयाश्रवस्त्वद्विधेः
 निःसंसारुद्वयं लघुहीमातन्त्रादितः। कमः। कविद्विगुनसंसिद्धया प्रयथ्यकमलवा। कविद्विद्वक्तिनामकविद्वर्थनवायुनः। अनूद्यमयितनेवहानद्यमः
 रुयाः। धियायनिवृत्तिमहाः। कविर्कविरुदंसहाजुधितनेवतः। धिवाद्युज्जयिहियागवतासदावर्धुः। कनसंकीर्त्यानिः। स्वनः। सयतीयतः। अनादसः
 गंधतथावर्द्धिप्रयिनिर्मितः। चर्वगुनकमयहानार्थमनुमहाधुवः। कथितावायकथिताः। नयात्रीत्याः। वगम्यतां। अथैकचिरांतुतत्समूहानमयादिती

२१

मायाः। नादसर्गस्यामायाः। दक्षिणाः। नाकाभयसदामुध्यागिनीकमलाकम्पोयावककृतयोस्यातांविधिवीज्यः। हाकिनी। नहदन्त्यसकात्रोव
 द्रह्मः। गिनसाद्विती। वलुविद्येतदाश्चानवधूवीजडरुस्मृतां। मवामायानवायागः। संहितावामकलुकेशः। सर्गवर्गद्वितीयः। यनिह्यायिभविनी। रुति
 नीजकिनीवामाकायतः। कलिकुन्दयकायवर्गशोधनावृट्टावधीवामनकः। समिद्धीवोसमोत्रकावद्योनिधिविगोः। कनः। नावानिनाष्टः। कोवय
 उद्धदन्मृद्वसर्गयकाहागः। कनालीनकुन्योततः। गयकटकटा। मरीनयावधसंसारुलका। ध्वद्विसर्गिगः। वृणामतिवामकलीयिक्काशुयुद्धदक्षिनीनिना

का

मूं

मूं

प्रकाशककमो निवसा

मूं

मूं

मूं

मूं

लागथाडोयहं नानादि कथे कमादतं व नाना जता व वारु मां ऊन विरु द धर्मु व विहा विन्दु तस्त्र न संयुक्त ४ कमाद्री जानि यं च हिा सुकृत् दूकृत् ययं

कृगिकाशय जववा मूकामहा कर्म लाना न (कृद्वि द्वा धु नी व ग म ४ सून स ४ सम नाना ग ४ सा न स धे क मादि भा दान वा धु म धा दय र्मा हल समूदा हता विधु

वर्धुयुग्मा र (ध आ द्वा र्धुयुग्मा य दिा त द धा या गिनी व धु ४ य श्च दी द्य स्त्र ने ४ स के ४ रु दि का व र थ म र द्वा कू टि ला न जि नी द्य टी न ल जा ती य (म इ ध ४ स्म भा

कि का दि व रु द्य यी व र्ध टी म लि मा ला व हा वि धु का वि नी त था ग कि न्य क न क र्त्तु र्थ य श्च दी द्य कि मा वि नी ला हू ला व द्ध मा न ध्य व र्ण आ वा र न व व

कां २५ कां